अश्वगंधा की खेती, किसान को खुशियां देती

मैं दिनेश कुमार धाकड़ पुत्र अमरलाल धाकड़ ग्राम बुरनहेड़ी पंचायत समिति खेराबाद का रहने वाला हूँ। मेरे पास 9.00 हैक्टेयर भूमि है। मैं और मेरा परिवार बरसों से पारम्परिक फसलों की खेती जैसे कि सरसों, सोयाबीन एवं गेहूँ करते चले आ रहे थे। लेकिन पारम्परिक खेती से जो उत्पादन एवं आय प्राप्त हो रही थी वह फायदे का सौदा नहीं था। प्रत्येक वर्ष कभी बारिश, बीमारी, सूखा एवं कीटों के प्रकोप के कारण खेती में लगातार घाटा होता जा रहा था। यह बात मेरे लिये एक चिन्ता का विषय बन गई थी कि आगे आने वाले समय में पारम्परिक खेती से परिवार का भरण–पोषण करना मुश्किल सा नजर आ रहा था। एक दिन मैं अपने चचेरे भाई के यहां गया जो कि झालावाड़ जिले का निवासी है। वहां मेने देखा कि मेरा भाई अश्वगंधा की खेती कर रहा था। मुझे अश्वगंधा की खेती के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उससे पता करने पर मुझे पता चला कि अश्वगंधा की खेती बहुत ही सरल है। इसमें कम आदानों एवं कम श्रमिकों का उपयोग होने से इसकी लागत भी कम और उत्पादन अधिक होने के कारण आय में वृद्धि होती है। अवारा पशु भी इस फसल को नही खाते है और न ही इसे नुकसान पहुंचाते है। जिस वजह से इस फसल में तारबंदी की जरूरत नहीं पड़ती है। यह सब देखकर बस मेने भी निर्णय कर लिया कि मैं भी अवश्गंधा की खेती करूगां। वर्ष 2011 में अश्वगंधा की खेती के लिये उद्यान विभाग कोटा के कृषि पर्यवेक्षक द्वारा मुझे जानकारी दी गई कि अश्वगंधा की खेती पर भी उद्यान विभाग द्वारा राष्ट्रीय औषधीय पादप मिशन के तहत अनुदान दिया जाता है एवं कृषकों को परम्परागत खेती से उद्यानिकी खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अश्वगंधा की खेती करने करने के लिए उद्यान विभाग से सम्पर्क किया तो मुझे ज्ञात हुआ कि अश्वगंधा का बीज मध्यप्रदेश के नीमच जिले के कृषकों से जो कि अवश्गंधा की खेती गत 20 वर्षों से कर रहे है, उपलब्ध हो सकता है। उन्नत बीज प्राप्त कर मेने प्रति हैक्टेयर 15–20 किलो की दर से 2.00 हैक्टेयर बीज उपचार उपरान्त खेत में अश्वगंधा का बीज बो दिया।

मुझे अश्वगंधा फसल से लागत की तुलना में अधिक मुनाफा प्रति हैक्टेयर की दर से प्राप्त हुआ। इस फसल के सभी भाग चाहे पत्ती, तना एवं जड़ तीनों ही भाग उपयोगी है। सूखी पत्तियां एवं तनों का उत्पादन 5 से 6 क्विंटल एवं जड़ों का 5 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हुआ। सूखी पत्तियों एवं तनों से मुझे 30,000 रूपये प्रति हैक्टेयर एवं जड़ों से 1,12,500 रूपये प्रति हैक्टेयर की राशि प्राप्ति हुई, मुझे कुल 1,42,500 रूपये की कमाई हुई एवं मात्र 30,000 रूपये प्रति हैक्टेयर की लागत आई। इस प्रकार कुल आय में से लागत को हटाकर 1,12,500 रूपये का शुद्ध लाभ हुआ।

प्राप्त लाभ को देखकर मेरा रूझान अश्वगंधा की खेती की और बढा। अब में कुल 6.00 हैक्टेयर में अश्वगंधा की खेती कर रहा हूँ, एवं उद्यान विभाग द्वारा मुझे राष्ट्रीय औषधीय पादप मिशन अन्तर्गत 2.00 हैक्टेयर में अश्वगंधा की खेती करने हेतु राशि रूपये 18,500 का अनुदान भी उपलब्ध कराया गया। इस प्रकार औषधीय फसल अश्वगंधा की खेती मेरे लिये फायदा का व्यवसाय साबित हो रहा है, एवं मैं आने वाले वर्षो में इसका रकबा अधिक करने की योजना बना रहा हूँ। मुझे देखकर मेरे रिश्तेदार एवं गाँव के लोग भी अश्वगंधा की खेती करने के लिये प्रोत्साहित हुऐ है, और कम लागत संसाधन में अधिक मुनाफा आसानी से प्राप्त कर रहें है।